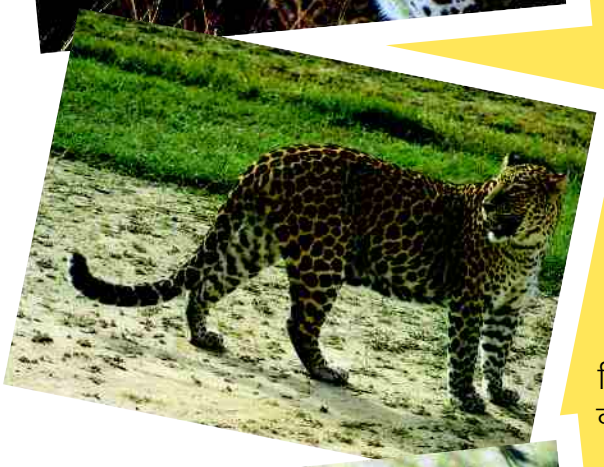

शाश्वत गोपाल

खट्टी-मिट्ठी चिट्ठी

प्यारी-प्यारी सिया और सारा,

पिछले सोमवार मैं तुम्हें एक कहानी सुनाना भूल गया। एक सच्ची कहानी।

कोई डेढ़ साल पहले जंगल से दो तेन्दुए एक शहर आए। शहर क्या, सीधे राजधानी रायपुर ही पहुँच गए। मालगाड़ी से। पक्के-पुराने, टूटे-फूटे घरों, झाड़ियों में रहे। शहर के जानवरों को खाया और पता नहीं कहाँ-कहाँ घूमे। शहर सोता था तब वे घूमते थे – रात में।

ठण्ड के दिन थे। जनवरी के आखिरी दिन। शाम का समय था। रायपुर के वैगन रिपेयर वर्कशॉप के कुछ लोगों ने एक दिन एक तेन्दुए को घूमते देखा। अपने देखे पर उन को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने यह बात और लोगों को बताई। उनकी तरह लोगों को भी तेन्दुए के देखे जाने की बात पर विश्वास नहीं हुआ।

इसी तरह कुछ दिन बीत गए। एक दिन एक महिला ने तेन्दुए को देखा। तेन्दुआ तब वैगन रिपेयर वर्कशॉप के एक खण्डहर में आराम कर रहा था। उस महिला ने अन्य लोगों को यह बात बताई। लेकिन पहले की तरह लोगों ने उसकी भी बात पर विश्वास नहीं किया। करते भी कैसे? शहर में तेन्दुआ थोड़े ही रहता है।

धीरे-धीरे लोगों को याद आया कि पिछले करीब एक साल से लोगों के पालतू जानवर, सड़क के आवारा कुत्ते अचानक गायब होते जा रहे हैं। लोगों ने शहर के कलेक्टर को बताया। फिर क्या था! उसने वन विभाग को आदेश दिया कि जाओ और देखो कौन राज्य की सीमा में घुस आया है। चार बड़े-बड़े पिंजरों के साथ वन विभाग के गार्ड पहुँच गए वैगन रिपेयर वर्कशॉप। कुछ दिनों की छुपा-छुपाई के बाद एक दिन तेन्दुआ नाली के बड़े पाइप में घुस गया। लोग बजाने लगे नगाड़े ढम ढमा ढम ढम.....। फिर पाइप के एक ओर पिंजरा लगाया गया और दूसरी ओर से आग जलाई गई। आग से डर कर तेन्दुआ दूसरी ओर लगे पिंजरे में घुस गया। धड़ाक से आवाज़ आई और पिंजरे में तेन्दुआ बन्द हो गया। खूब भीड़ लगी तेन्दुए को देखने।

लोग खुश थे कि जंगल के "छोटे राजा" पकड़ाई में आ गए – बड़े राजा तो शेर हैं। लोगों ने शहर के कलेक्टर को बधाई दी। वो महिला और वे लोग भी खुश थे जिन्होंने तेन्दुए को पहली बार देखा था। पिंजरे में बन्द तेन्दुए की अखबारों में खूब तस्वीरें छपीं। लेकिन सभी तस्वीरें तेन्दुए ने गुस्से में खिंचवाईं।

आसपास फिर शान्ति का माहौल हो गया। बच्चे घर के बाहर खेलने लगे। लोग अपने-अपने काम खत्म करने के बाद घर अकेले भी लौटने लगे।

एक दिन अचानक एक बकरी मरी हुई मिली। उसकी गर्दन में छेद थे। लोगों ने अकेले बाहर जाना बन्द कर दिया। घरों के खिड़की-दरवाज़े बन्द रहने लगे। लोग फिर सतर्क हुए और सोचा कि कहीं शहर के पड़ोस में जंगल तो नहीं आ गया? जंगल शहर के पड़ोस में नहीं आता सिया, शहर जंगल के पास चले जाते हैं। शहर बढ़ता है तो जंगल घटता है। जब तुम दोनों बड़ी होगी तब तक तो पता नहीं कितनी दूर का जंगल घटकर शहर बन चुका होगा? बकरी के मरने के बाद लोग सोच रहे थे कि तेन्दुए को तो वे करीब 135

किलोमीटर दूर स्थित बारनवापारा के जंगल में छोड़ आए थे, वह फिर कैसे लौट आया? इस तरह कुछ दिन और बीत गए। कोई घटना नहीं घटी।

कुछ दिनों बाद मालगाड़ी के ड्राइवर ने इंजन की खिड़की की सलाखों के पीछे से देखा। वैगन रिपेयर वर्कशॉप के पास एक तेन्दुआ और उसके दो बच्चे झाड़ियों के पीछे रेलगाड़ी की आवाज़ से डरकर छुप रहे थे। ड्राइवर ने तुरन्त इसकी सूचना वन विभाग को दी।

फिर से वैगन रिपेयर वर्कशॉप के आसपास पिंजरे लगाए गए। इस बार एक जाँच दल भी बनाया गया जो जाँचेगा कि जंगल के निवासी यहाँ कैसे आए। अन्दाज़ लगाया गया कि दो तेन्दुए, एक नर और एक मादा, किसी मालगाड़ी से वैगन रिपेयर वर्कशॉप करीब एक-डेढ़ साल पहले पहुँचे होंगे। हुआ यह होगा कि मालगाड़ी जंगल में कुछ देर के लिए खड़ी रही होगी। कभी-कभी लाइन न मिलने के कारण गाड़ियाँ जंगल में खड़ी रह जाती हैं। गाड़ियों में सामान के अलावा कई बार गाय, भैंस, बकरी आदि पालतू जानवर एक जगह से दूसरी जगह ले जाए जाते हैं। इन्हीं जानवरों की गन्ध की वजह से दोनों तेन्दुए रुकी हुई मालगाड़ी के पास आए होंगे और इन्हें खाने के लालच में मालगाड़ी के खुले डिब्बे में सवार हो गए होंगे।

एक लम्बे सफर के बाद जब ट्रेन रायपुर के वैगन रिपेयर वर्कशॉप के पास पहुँची होगी तो ये दोनों वहाँ की झाड़ियों को जंगल समझकर उतर गए होंगे। तेन्दुए के बच्चे इतने छोटे हैं कि वो ट्रेन में खुद तो चढ़ नहीं सकते। इसलिए वन विभाग के अधिकारियों का मानना है कि इन बच्चों का जन्म यहीं हुआ होगा। सिया, तुम्हारे जन्म प्रमाण-पत्र की तरह उनका जन्म प्रमाण-पत्र रायपुर नगर निगम से ही बनेगा। अब दोनों बच्चे अपनी माँ के साथ शहर में घूमते हैं। कभी-कभी एक ही रात में 10-15 किलोमीटर तक घूम आते हैं।

इतने महीनों से तेन्दुए का यह परिवार वैगन रिपेयर वर्कशॉप में रह रहा था। लेकिन नर तेन्दुए के पकड़े जाने के बाद वो अपना घर बदलने लगे हैं। एक दिन दोनों बच्चे अपनी माँ के साथ वैगन वर्कशॉप से बहुत दूर छत्तीसगढ़ विधानसभा के पीछे के खेतों में दिखाई दिए, जहाँ रात को एक महिला ने कुएँ से पानी भरते समय उन्हें झाड़ियों के पीछे छुपते देखा। परसों वे कृषि विश्वविद्यालय कैम्पस में बने घरों के पास दिखाई दिए। वहाँ कुछ लोगों ने रात को करीब 10 बजे एक कुत्ते जैसे जीव और दो बच्चों को सोए देखा। उन्होंने आपस में बात की कि कुत्ता ऐसा तो नहीं दिखता। तुरन्त टॉर्च लाई गई। तब तक तीनों सो रहे थे। क्या करें, छुपते-छुपते थक गए होंगे। जैसे ही टॉर्च जली तेन्दुए के बच्चों की माँ ने कहा गुर्र, गुर्र.....हमें सोने दो। फिर क्या था। न तीनों तेन्दुए सोए न सैकड़ों लोग। वहाँ से तीनों फिर भाग गए। वन विभाग का पिंजरा अब कृषि विश्वविद्यालय के आसपास लगाया गया है।

लोग अब फिर अकेले घर नहीं जाते। तीनों के पैरों के निशान जगह-जगह दिखाई देते हैं। कभी एक मोहल्ले में तो कभी दूसरे मोहल्ले में। वन विभाग और तीनों की छुपा-छुपाई करीब तीन महीनों से चल रही है। वन विभाग के अधिकारी और तेन्दुए जब एक-दूसरे को देखते हैं तो दोनों ही डर जाते हैं।

सारा और सिया, जब हम शहर से दूर जंगल जाते हैं तब भी ये जानवर हमसे परेशान होते हैं। जंगल के ये खूँखार जीव अच्छे हैं। सच में बहुत अच्छे, लेकिन क्या करें गलत स्टेशन में उतर गए, वो भी बिना रिटर्न टिकट।

कहानी अभी खत्म नहीं हुई। आगे की कहानी जल्द ही सुनाऊँगा।

तुम्हारा मामा

शाश्वत गोपाल